1.

मिल का उपयोगितावाद

जे० एस० मिल, जो जरमी बेंथम का शिष्य थो, व्यक्तिवाद और स्वतंत्रतावाद का महान उन्नायक था। उदारवादी चिंतन परम्परा में उसका बड़ा योगदान थी कि उसने अपने समय के अनुरूप स्वतंत्रता की संकल्पना को बदल दिया। 19वीं सदी के मध्य में उपयोगितावादी सुधारों के फलस्वरूप इंग्लैण्ड में प्रशासनिक गतिविधियों का क्षेत्र बहुत बढ़ गया था बेंथम और उपयोगितावादी मानते थे कि " अधिकतम लोगों के लिए अधिकतम सुख" की प्राप्ति के लिए राज्य को व्यक्तियों के गतिविधियों में कम से कम हस्तक्षेप करना चाहिए। मिल ने इस मान्यता में संशोधन कर के राज्य के कार्य क्षेत्र के विस्तार के लिए उपयुक्त पृष्ठभूमि का का निर्माण किया। मिल ने स्वतंत्रता का प्रबल समर्थन करते हुए यह विचार रखा की कि राज्य के हस्तक्षेप के बिना स्वतंत्रता का सार्थक होना असंभव है। इस प्रकार मिल ने सकारात्मक उदारवाद की धारणा के विकास में महत्वपूर्ण योग दिया।

उपयोगितावाद में मिल द्वारा लाये गए परिवर्तन —

मिल ग्रुरु द्वारा प्रतिपादित उपयोगितावाद का समर्थन करता है किन्तु उपयोगितावाद को परिष्कृत करने एवं उसकी ~~सूखी~~ सूखी अस्थियों के ढांचे को रक्त, मज्जा, वसा एवं मांस से परिपूरित करने के प्रयास में वह इतना आगे निकल जाता है कि बेंथमवाद के संपूर्ण स्वरूप को बदलकर उपयोगितावाद की धज्जियाँ उड़ा देता है। मिल ने उपयोगितावादी सिद्धांत को निम्न रूप से परिवर्तित किया है—

1. मनुष्य स्वार्थी ही नहीं, परमार्थी भी होता है —

बेंथम के अनुसार मनुष्य बिल्कुल स्वार्थी होता है। वह सदा

आत्म केन्द्रित रहता है। उसका लक्ष्य सर्वदा अपने सुख की प्राप्ति करना है। वह दूसरों के सुख-दुःख को नहीं समझ सकता है। इसके विपरीत मिल का कथन है कि मनुष्य सिर्फ स्वार्थी ही नहीं, परमार्थी भी होता है। उसमें अपने ही सुख की चाह नहीं होती, अपितु दूसरों के सुख के लिए त्याग की भावना भी होती है।

2. एक असंतुष्ट सुकरात होना एक संतुष्ट मूर्ख होने से अच्छा है—

इस उक्ति में मिल ने सुख की गुणात्मक पहलू पर जोर देते हुए विभिन्न प्रकार के सुखों में अन्तर बतलाया है। मिल ने उपयोगितावादी तर्क को शक्ति प्रदान करने के लिए विभिन्न प्रकार के सुखों में अन्तर बतलाया है। उसका यह विचार भी बेंथमवाद के विरुद्ध है। बेंथम ने सुखों में केवल मात्रात्मक अन्तर को बताया है जबकि मिल ने सुखों के मात्रात्मक के अतिरिक्त गुणात्मक अन्तर को भी स्वीकार किया है। बेंथम के अनुसार "आनंद की मात्रा समान होने पर पुश-पिन उतना ही अच्छा होता है जितना एक मधुर काव्य"। वहीं मिल के अनुसार "एक असंतुष्ट सुकरात होना एक संतुष्ट मूर्ख से अच्छा है।"

3. अच्छा जीवन, सुखमय जीवन से श्रेष्ठ है—

जहाँ बेंथम के अनुसार जीवन का अंतिम लक्ष्य उपयोगिता है, वहीं मिल के अनुसार अपने व्यक्तित्व को उत्कृष्ट बनाना प्रत्येक मनुष्य के जीवन का अंतिम लक्ष्य होना चाहिए। मिल जर्मन चिंतक हंबोल्ट की आत्मानुभूति के सिद्धांत का समर्थन करता है। बेंथम के अनुसार मनुष्य का चरम लक्ष्य आत्मानुभूति नहीं, अपितु सुख की उपलब्धि एवं दुःख का परिहार है। इसके विपरीत मिल का विचार है कि मनुष्य को सिर्फ वही कार्य करना चाहिए जो व्यक्तित्व को उत्कृष्ट करने में सहायक हो क्योंकि वह केवल उसी सुख की प्राप्ति पर जोर देता है, जो व्यक्ति की उत्कर्ष प्राप्ति की भावना जगा सके।

Scanned with CamScanner

इस प्रकार मिल ने 'अच्छे जीवन' को 'सुखमय जीवन' से श्रेष्ठ माना।

जहाँ बेंथम ने सिर्फ बाह्य वस्तुओं प्राकृतिक, राजनीतिक धार्मिक आदि-को सुख-दुःख का स्रोत माना है, वहीं मिल ने अन्तरात्मा एवं कर्तव्य-भावना को भी सुख का स्रोत माना है।

4. समाज का लक्ष्य, समाज के समस्त लोगों का आध्यात्मिक कल्याण है—

यह भी स्पष्ट है कि बेंथम की तुलना में मिल ने समाज को अधिक महत्व प्रदान किया है। जहाँ बेंथम के अनुसार समाज सिर्फ एक कृत्रिम संस्था है, मिल समाज को स्वाभाविक मानता है। बेंथम के विपरीत मिल व्यक्ति की तुलना में समाज को श्रेष्ठतम स्थान प्रदान करते हैं, क्योंकि उनका विश्वास है कि स्वस्थ सामाजिक वातावरण में ही व्यक्तियों का कल्याण संभव है। मिल के अनुसार व्यक्तिगत नैतिकता का सामाजिक उद्देश्य होता है एवं समाज का भी एक आध्यात्मिक लक्ष्य होता है और वह लक्ष्य है समाज के समस्त लोगों का आध्यात्मिक कल्याण। मिल ने बेंथम के इस विचार को 'प्रत्येक व्यक्ति सुख की इच्छा रखता है', आगे बढ़ाया और कहा कि मनुष्य को सार्वजनिक सुख की कामना करनी चाहिए और उसके लिए प्रयास करना चाहिए।

5. बेंथम के विपरीत मिल का कहना है— नैतिकता की उत्पत्ति भय, स्मृति एवं स्वार्थपूर्ण आकांक्षाओं से ही नहीं, प्रेम, सहानुभूति एवं त्याग की भावना से भी होती है।

6. बेंथम के अनुसार स्वतंत्रता उपयोगिता सिद्धांत की अनुगामिनी होती है, किन्तु मिल के अनुसार स्वतंत्रता का अपना अलग

महत्व होता है। यह स्वयं अपने में एक साध्य है। बेंथमवाद स्वतंत्रता के नैतिक महत्व को स्वीकार नहीं करता जबकि मिल ने स्वतंत्रता के नैतिक महत्व पर पूर्ण बल दिया है।

7. बेंथम विश्वासवादी है, किन्तु मिल ऐतिहासिक सापेक्षवादी।

8. बेंथम के अनुसार प्रजातंत्र सभी देशों के लिए उपयुक्त है, परन्तु मिल इस तथ्य को स्वीकार नहीं करता। मिल का विश्वास है कि प्रजातंत्र वहीं सफल हो सकता है, जहाँ के नागरिकों में चारित्रिक सद्गुण होते हैं।

9. राज्य की उत्पत्ति का कारण स्वार्थ नहीं इच्छा है— राज्य के आधार के सम्बंध में मिल ने बेंथम के विचार को संशोधित किया है। बेंथम की भाँति मिल भी इस बात को स्वीकार करता है कि राजनीतिक संस्थाओं का निर्माण मनुष्यों द्वारा होता है। जहाँ बेंथम ने राज्य को व्यक्तिगत हित पर आधारित किया है, मिल राज्य को व्यक्ति की इच्छा पर आधारित किया है। मिल के अनुसार इच्छा संकल्प का नहीं, गुण का द्योतक है एवं जो इच्छा राजनीतिक संस्थाओं का निर्माण करती है, वही आगे चलकर विश्वास का रूप लेती है। अतएव, मिल ने कहा है कि " एक व्यक्ति, जिसका अपना विश्वास होता है, सामाजिक शक्ति में उन 99 व्यक्तियों के बराबर होता है जिनमें केवल व्यक्तिगत हित की भावना होती है।"

10. राज्य के कार्य-संबंधी बेंथम के विचारों को भी मिल ने संशोधित किया है। जहां बेंथम ने राज्य के अहस्तक्षेप नीति का समर्थन किया है, वहीं मिल ने राज्य के उचित हस्तक्षेप को व्यक्ति के व्यक्तित्व के विकास में सहायक माना है।

उपर्युक्त तथ्यों से स्पष्ट है कि मिल ने बेंथमवाद को पूरी तरह से परिवर्तित किया है। उसने बेंथम के उपयोगितावाद की अपर्याप्तता, उसकी अपूर्णता, उसका नैतिक स्तर एवं भावनाओं के प्रति उदासीनता, को मिटाने का भरसक प्रयास किया है।

Dr. Akhlakh Ahmad
(Asst. Prof.) Dept. of Pol. Sc.
D.K. College, Dumraon.

Scanned with CamScanner